31-12-97

इस नये वर्ष को मुक्ति वर्ष मनाओ, सफ़ल करो – सफ़लता लो

आज बापदादा अपने नव जीवन की श्रेष्ठ आत्माओं को, नव युग रचता आत्माओं को नये वर्ष की मुबारक दे रहे हैं। दुनिया के लिए नया वर्ष आरम्भ हो रहा है, आप बच्चों के मन में नव युग याद आ रहा है। जैसे नया वर्ष कल आने वाला है, ऐसे नव युग भी कल आने वाला है। ऐसे स्मृति आती है कि हमारा नया युग आया कि आया? जैसे आज नये वर्ष के लिए मनुष्य आत्माओं के दिल में खुशी है, अल्पकाल का उत्साह है, ऐसे आप आत्माओं को नव युग आने की सदाकाल की खुशी है। ऐसे लगता है कि बस आज और कल की बात है। आज पुराना युग है, कल नया युग सामने खड़ा है। ड्रामानुसार आज और कल की बात है, ऐसे स्पष्ट स्मृति अनुभव होती है? या सिर्फ नया वर्ष मनाने आये हो? नया वर्ष नव युग की याद दिलाता है। यह उमंग-उत्साह दिल में रहता है कि कल हम क्या होंगे? अपनी नई शरीर रूपी ड्रेस सामने आती है? याद है आपका नया शरीर नये युग में कैसा सुन्दर था? कैसा युग था, कैसे राज्य था, कैसे प्रकृति दासी थी, सतोप्रधान थी! उस राज्य अधिकारी स्थिति की स्मृति स्पष्ट है? दिखाई दे रही है, वह नई दुनिया कितनी सुन्दर है? एक सेकण्ड में अपने राज्य अधिकार का अनुभव कर सकते हो या कर रहे हो? बस एक सेकण्ड में नव युग में चले जाओ। जाना आता है? कितने वार यह राज्य अधिकार प्राप्त किया है, याद है? अनुभव करो अपना राज्य कितना प्यारा है! न्यारा भी है तो प्यारा भी है। तो सेकण्ड में बस हमारा राज्य और हमारा विश्व राज्य अधिकारी स्वरूप स्मृति में आ जाए। वे लोग नये वर्ष में एक दो को अल्पकाल की गिफ्ट देते हैं और बाप गिफ्ट देते हैं नव युग के, विश्व राज्य के अधिकार की। यह अविनाशी गिफ्ट इस समय बाप द्वारा आप सबके लिए अटल भावी बन जाती है। जिस भावी को कोई टाल नहीं सकता। अचल है, अखण्ड है। तो ऐसी गिफ्ट मिल गई है ना? तो यह गिफ्ट सम्भाल कर रखना, कोई डाकू यह गिफ्ट ले नहीं जाये। सबके पास डबल लॉक है ना? आजकल सिंगल लॉक नहीं चलता, डबल लॉक चाहिए। गाडरेज का लॉक नहीं, गॉड का लॉक चाहिए। तो गॉड ने ऐसा लॉक दिया है जो कोई भी तोड़ नहीं सकता।

अगर अलबेले हो जायेंगे तो डाकू आयेगा। डाकू भी होशियार होते हैं, उन्हों को पता पड़ जाता है कि इनका लॉक आज ढीला है, इसलिए अलबेले नहीं होना।

तो इस नये वर्ष में स्व के प्रति और सेवा के प्रति कोई नया प्लैन बनाया है? कान्फ्रेन्स करनी है, डायलॉग करना है, वह तो है ही। नया प्लैन क्या बनाया है? बापदादा इस नये वर्ष में, देश वा विदेश में वैरायटी वर्ग की विशेष आत्माओं का एक गुलदस्ता देखने चाहते हैं। वर्गों की सेवा तो बहुत की है ना, अभी हर वर्ग का ऐसा एक-एक रत्न तैयार करो, एक भी वर्ग मिस नहीं हो, क्यों? अभी जब समय समीप आ रहा है तो कोई भी वर्ग वाले उल्हना नहीं दें कि हमारा वर्ग रह गया। एक-एक वर्ग में विशेष एक-एक क्वालिटी का हो जो माइक का काम कर सके, क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है तो सर्व वर्ग वाले, सर्व धर्म वाले सबके मुख से एक आवाज निकले कि बाप आ गया, क्योंकि इस संगमयुग में ही सभी धर्म स्थापक आत्माओं वा सर्व वर्ग की आत्माओं में बीज पड़ना है। वह इतनी पावर अपने में ले जायेंगे जो फिर अपने-अपने समय पर वर्ग वा धर्म के इन्वेन्टर बनेंगे। तो सब बीज आपको तैयार करने हैं, जो समय पर अपने-अपने डिपार्टमेंट के निमित्त बनेंगे क्योंकि बीज बाप है और आप ब्राह्मण आत्मायें तना हो, सर्व आत्मायें बीज और तना द्वारा ही निकलते हैं। तो ऐसा गुलदस्ता बाप के सामने लाओ, विदेश वाले भी और देश वाले भी। एक-एक सैम्पुल लाओ, सैम्पुल से अन्य अनेकों स्वत: ही बनते हैं। लेकिन एक-एक पावरफुल माइक बनें, ऐसे बीज कहो, धर्म या वर्ग कहो वा वैरायटी फूलों का गुलदस्ता कहो तैयार होना चाहिए। एक भी मिस नहीं हो तब कहा जायेगा विश्व कल्याणकारी वा सर्व आत्माओं के निमित्त उद्धार करने वाली आत्मायें। एक शाखा भी कम नहीं, सर्व शाखायें चाहिए। चाहे आपके नव युग में कई वर्ग नहीं होंगे लेकिन उन आत्माओं में भी द्वापर में या कलियुग में जो इन्वेन्टर निमित्त हैं, उन्हों को शक्ति आप द्वारा ही मिलनी है। जैसे सभी धर्म पितायें आपके आगे बाप का झण्डा, प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में सहयोगी बनेंगे, वैसे ही सर्व वर्ग वाले भी प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में सहयोगी बनेंगे, तब कहेंगे सर्व के सहयोग से सुखमय दुनिया की स्थापना। सहयोगी बन रहे हैं लेकिन उनमें से अब विशेष आत्मा को सहयोग में आगे बढ़ाओ, निमित्त बनाओ। निमित्त बनाने का बीज डालो। समझा क्या करना है? विदेश में भी अभी

आई.पी. या वी.आई.पी. के कनेक्शन तो सहज हो गये हैं ना। मुश्किल नहीं है ना? मुश्किल है या सहज है? तो आप सभी जब दूसरे न्यु ईयर में फिर आयेंगे तो अगले न्यु ईयर की सौगात बापदादा ऐसा गुलदस्ता देखने चाहते हैं। एक साल है, कम नहीं है। देश वाले भी करेंगे, विदेश वाले भी करेंगे ? (हाँ जी) अवश्य करेंगे। कहो हुआ ही पड़ा है। सिर्फ निमित्त बनना है। डबल विदेशी बोलो? सब विदेशी ताली बजाओ। अच्छा-देखेंगे पहले कौन तैयार करता है - देश या विदेश? और कितना बड़ा गुलदस्ता तैयार करते हैं? ठीक है ना? चारों ओर सुन रहे हैं। देश वाले भी सुन रहे हैं, विदेश वाले भी सुन रहे हैं। अभी उमंग आ रहा है, उन्हों के मन में प्लैन बन रहा है - यह करेंगे, यह करेंगे। अच्छा - यह तो हुआ विश्व सेवा।

स्व के लिए क्या करेंगे? वह भी तो प्लैन बनेंगा ना? क्योंकि अगर स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन नहीं बनायेंगे तो विश्व सेवा में सकाश नहीं मिल सकेगी। इसलिए बापदादा सबके दिलों के उमंग-उत्साह को जानते हुए यही कहेंगे कि हर एक उत्सव में बच्चों ने चाहे गोल्डन जुबली वाले, चाहे डायमण्ड जुबली वाले, चाहे सिल्वर जुबली वाले, चाहे और भी जो जुबलियां होनी हैं, सभी ने दिल से, उमंग-उत्साह से अपने मन में यह बाप से वायदा किया है कि हम बाप समान बनकर ही दिखायेंगे। सभी ने यह वायदा किया है ना? डबल फारेनर्स ने वायदा किया है? (सभी ने हाथ हिलाया) अच्छा, मुबारक हो। वायदा तो बहुत मीठा, बहुत अच्छा, बहुत प्यारा, बहुत शक्तिशाली किया है। अभी सिर्फ निभाते रहना। वायदा करने वाले उस समय बहुत उमंग-उत्साह से करते हैं, हिम्मत भी बहुत अच्छी रखते हैं फिर क्या होता? कभी माया चूहे के रूप में आ जाती, कभी बिल्ली के रूप में आ जाती, बिल्ली क्या करती है? म्याऊं-म्याऊं करती है ना। तो बच्चे क्या करते हैं? मैं मैं मैं, तो यह बिल्ली की म्याऊं-म्याऊं नहीं करना। चूहा क्या करता है? चूहा बेसमझ होकर जो आता है वह खा लेता है, काट लेता है। तो माया भी बच्चों के खजानों को काटकर खा लेती है। कभी शेर आ जाता है, शेर क्या करता है? निर्भय वालों को भय पैदा कर देता है। सर्वशक्तिवान बच्चों को दिलशिकस्त बना देता है। ऐसे नहीं करना, आने नहीं देना, डबल लॉक लगाकर ही रखना। इस वर्ष किसी को भी आने नहीं देना।

यह वर्ष सर्व बातों से मुक्त वर्ष मनाओ। मुक्ति वर्ष। जब यह मुक्ति वर्ष

मनायेंगे तब मुक्तिधाम में जायेंगे। इसके लिए क्या करेंगे? बहुत छोटी सी बात है, बड़ी बात नहीं है। बापदादा सिर्फ छोटा सा स्लोगन दे रहे हैं ''सफल करो सफलता ला''। समझा! सफल करो, सफलता लो। क्या सफल करना है? जो भी आपके पास है, अपनी जो प्रापर्टी है ना - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सफल करो, व्यर्थ न गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो। संकल्प को भी सफल करो। एक-एक संकल्प - यह आपकी प्रापर्टी है। जैसे धन स्थूल प्रापर्टी है, वैसे सूक्ष्म प्रापर्टी है समय, श्वांस, संकल्प। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जाये, सफल हो। चाहे मन्सा सेवा द्वारा, चाहे वाचा द्वारा, चाहे कर्म द्वारा - चेक करो, सफल कितना किया? जमा कितना किया? और बापदादा इस वर्ष यह विशेष वरदान दे रहे हैं - सफल करो और पदमगुणा सफलता का अनुभव करो। यह प्रत्यक्ष फल सहज प्राप्त कर सकते हो, सिर्फ सच्ची दिल से। सच्ची दिल पर भोलानाथ बाप बहुत सहज राज़ी हो जाता है, इसलिए सफल करो। ज्ञान धन, शक्तियों का धन, गुणों का धन हर समय सफल करो। सफल करना आता है वा किनारे करना वा सम्भालने बहुत आता है? किनारे नहीं करो, लगाओ। जब कहते हो कि अचानक सब होना है, एवररेडी बनना है। तो जो भी है उसको सफल करो। बापदादा को नहीं चाहिए, अपने लिए जमा करो। बापदादा तो दाता है लेकिन सफल करना अर्थात् जमा करना क्योंकि बापदादा ने समय प्रमाण जमा का खाता देखा, हर एक बच्चे के जमा का खाता बापदादा के पास है। तो जमा के खाते में क्या देखा? कई बच्चे समझते वा कहते बहुत हैं कि हमारा यह भी जमा है, यह भी जमा है, बाहर से जमा का खाता बहुत वर्णन करते हैं लेकिन बाप के जमा के खाते में जो जितना कहते हैं, समझते हैं उससे बहुत कम जमा है। क्यों? वही पहला पाठ ''मैं और मेरा-पन''। मैंने किया, मेरी यह सेवा है, मेरा यह कार्य है। तो जमा करते समय, वह समझते हैं कि जमा कर रहे हैं लेकिन वह ऑटोमेटिक जमा के खाते से निकल, व्यर्थ के खाते में जमा हो जाता है। यह ऑटोमेटिक सूक्ष्म मशीनरी है। बाबा ने कराया, बाबा की सेवा है, मेरी सेवा नहीं है। मैंने किया, नहीं। वर्णन नहीं करो, मैंने यह किया, मैं यह करती हूँ, मैं यह करता हूँ...यह मैं-मैं नहीं। बाबा, बाबा बोलो तो पदमगुणा जमा होगा। और मैं मेरा बोलेंगे तो ट्रांसफर होकर व्यर्थ के खाते में जमा हो जायेगा। यह ऑटोमेटिक मशीनरी बहुत फास्ट है, आप लोगों को पता भी नहीं पड़ता

है। इसकी चेकिंग भी बहुत सच्चे दिल से, मैं-पन से न्यारे होकर करने वाले कर सकते हैं। जब आप आदि रत्न आदि में स्थापना में निकले, सेवा में निकले तो क्या भाव रहता था? क्या बोल निकलता था? मैं-पन था? बाबा-बाबा कहा तभी वारिस बाबा के बने, जो आज सेवा के आदि बनें, यह बाबा-बाबा कहने का सबूत है।

अभी बापदादा के पास वारिस क्वालिटी बहुत कम आती हैं, क्यों? बाबा और मैं-पन मिक्स है। इसलिए इस वर्ष में बापदादा खुली दिल से वरदान दे रहे हैं - **जितना जमा करने चाहो उतना कर लो, कर लो, कर लो।** सफल करो सफलता मूर्त बनो। अच्छा।

अभी कौन सा उत्सव मनाया? सिल्वर जुबली। सिल्वर जुबली वाले हाथ उठाओ। जिन्हों की सेरीमनी मनाई वह हाथ उठाओ। डबल सेरीमनी मनाई है। भारत की भी तो विदेश की भी। अच्छा है यह सेरीमनी मनाना अर्थात् अपने आपको पक्की प्रतिज्ञा की स्टैम्प लगाना। सेरीमनी मनाई, बापदादा को भी दृश्य अच्छा लगता है। साथ-साथ जो संकल्प करते हो, उसको ऐसी आलमाइटी गवर्मेन्ट की स्टैम्प लगाओ जो सदा अविनाशी, अटल रहे। मनाना अर्थात् वायदा निभाना। तो ऐसी पक्की स्टैम्प लगाई? या कच्ची स्टैम्प लगाई है? पक्की लगाई? यह सिल्वर जुबली वाले कुमार, हाथ तो अच्छा हिला रहे हैं, पक्की मनाई है? अच्छा है। यह दृश्य भूल नहीं जाना। कभी भी कुछ भी कमजोरी आये तो अपने उत्सव का फोटो सामने लाना। हर एक का फोटो निकालते हैं ना। सबको मिलता है? तो ऐसे फोटो नहीं निकलता है, मतलब से निकलता है। फोटो इसीलिए निकलता है कि जब ऐसा कोई समय आवे तो फोटो सामने रखना, ऐसे नहीं आलमारी में बन्द रख दो जो समय पर भी याद नहीं आवे। यह सबसे बड़ी सौगात है, यह स्मृति दिलाने की निशानी है।

तो यह जो सिन्धी ग्रुप आया है वह हाथ उठाओ। अच्छा - आपने उत्सव मनाया? फोटो निकला? अभी क्या करेंगे? सम्भालकर रखेंगे ना? इस ग्रुप का हेड कौन है? (नारी भाई और गोविन्द भाई) हेड तो पावरफुल है। अभी इस ग्रुप को बहुत-बहुत-बहुत पक्का रखना, सम्भालना। उत्सव मनाया है सदा उत्साह में रहने के लिए। यह ज्ञान, योग का उत्साह कम नहीं हो। सदा बढ़ता रहे। शक्तियों में जिम्मेवार कौन है? (त्रिमूर्ति है) सभी की युनिटी बहुत है। अमर रहना। अमर

भव। अच्छे हैं। देखो, बापदादा सिन्धी ग्रुप को क्यों आगे रखता? वैसे तो सभी हैं ना? सभी एक दो से आगे और प्यारे हैं लेकिन खास सिन्धी ग्रुप को आगे क्यों रखता? इस सिन्धी ग्रुप को चैरिटी बिगन्स एट होम...., जहाँ से स्थापना हुई, उस कुल को जगाना है। इसलिए बापदादा आप सभी को विशेष याद भी करता, निमित्त भी बनाया है तो निमित्त बन अपने लौकिक कुल सिन्धियों को जगाओ, रह नहीं जावें। फिर भी ब्रह्मा बाप का स्थापना का कार्य सिन्ध में हुआ है। तो जहाँ स्थापना हुई वह आत्मायें वंचित नहीं रह जायें। बापदादा को भी उन आत्माओं पर तरस पड़ता है। ब्रह्मा का तो चैरिटी बिगन्स एट होम है ना। इसलिए ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को निमित्त बनाया है। समझा जिम्मेवारी, है या नहीं? यह होशियार है। देखो जब स्थापना हुई तो पहला परिवार ब्रह्मा बाप का और साथ में आपका (नारी भाई का) परिवार निमित्त बना। पता है ना? तो अभी आप क्या करेंगे? (उत्तर बहुत अच्छा देता है) बापदादा कहते हैं आपके मुख में गुलाबजामुन। गुलाब नहीं। सिर्फ गुलाब क्या करेंगे, गुलाबजामुन खायेंगे ना। ऐसे नहीं एक को कह रहे हैं, सभी को निमित्त बनना है और दूसरा है सावित्री का परिवार। आप लोगों को पता है, आपका परिवार सेवा में पहले निमित्त बना है। विशेष सेवा को आगे बढ़ाया है तो अभी क्या करना है? फालो लौकिक माँ बाप। तो फालो करना है? अभी बापदादा देखेंगे दोनों परिवार क्या कमाल करके दिखाते हैं। अच्छा है, निमित्त बने हो, जैसे माँ बाप निमित्त बनें, बड़े निमित्त बनें, ऐसे फालो करो। ठीक है ना। देखो स्पेशल बापदादा आपसे मिल रहा है। तो लक है ना। अच्छा।

अभी कुमार क्या करेंगे? (कुमार 5 हजार आये हैं) बहुत अच्छा। कुमार कोई नई कमाल करके दिखाओ, ऐसी कमाल दिखाओ जो असम्भव को सम्भव करके दिखाओ। कुमारों को बापदादा विश्व की स्टेज पर एक्जैम्पुल बनाकर खड़ा करने चाहते हैं। ऐसे कुमार हीरो पार्ट बजायेंगे? पक्का या हाथ उठाने तक? देखो हीरो पार्ट बजाने वाले बेदाग हीरा होना चाहिए। डबल हीरो। बेदाग हीरा भी और हीरो पार्टधारी भी। ऐसे हैं?

डबल फारेनर्स क्या कमाल करेंगे? डबल फारेनर्स ऐसी कमाल करके दिखाओ जो ऐसी आत्माओं को सन्देश दो जो भारत के लिए माइक बनें, क्योंकि भारत के माइक का भी प्रभाव है लेकिन फारेन के माइक का प्रभाव

डबल पड़ेगा। तो डबल फारेनर्स को ऐसे माइक तैयार करने हैं। करेंगे? अगले वर्ष माइक आना चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ भाषण करके चले जायें, नहीं। संबंध में समीप हों। भले ज्ञान, योग में नियमित नहीं बनें लेकिन मानें कि सचमुच यह ईश्वरीय कार्य है और जीवन बनानी ऐसी चाहिए लेकिन मेरे में हिम्मत कम है। उसमें भी कोई हर्जा नहीं, औरों के निमित्त माइक बनते-बनते स्वयं बन ही जायेगा। वैसे सीधा स्टूडेन्ट नहीं बनेंगे लेकिन सेवा के बल से दूसरों के निमित्त बनते, उसके प्रभाव से बन जायेंगे। तो सुना डबल फारेनर्स ने? अभी देखेंगे कौन सा देश निमित्त बनता है। जो भी देश निमित्त बने, फिर उसको अवार्ड देंगे।

डबल विदेशी वहाँ भी सुन रहे हैं, उन्हों की भी दिल में आ रहा है, ढूंढ रहे हैं किसको निमित्त बनायें। अच्छा। फारेन के यूथ ग्रुप हाथ उठाओ। (20 देशों से 170 यूथ ने रिट्रीट में भाग लिया है) अच्छा किया। अभी विदेश के यूथ ऐसी सेवा करके अपना ग्रुप तैयार करो, तो फिर जब महात्माओं का सम्मेलन होगा ना, उसमें आप सभी यूथ ग्रुप को निमन्त्रण देंगे। तो आप यूथ के आगे यह महात्मायें जो हैं वह सिर झुकावें, समझा। तो ऐसा ग्रुप तैयार करो।

(यूथ ग्रुप के मास्टर, जापान के ली भाई से) अच्छा ग्रुप तैयार किया है। अभी ऐसा तैयार करो जो भारत के महात्मायें ब्रह्मचर्य में रहना असम्भव वा मुश्किल समझते हैं, उन्हों को यह यूथ अपने अनुभव से सुनावें कि मुश्किल नहीं है, सहज है और हम सहज योगी, सहज ब्रह्मचारी बने हैं। तो ऐसे पक्के ब्रह्मचारी योगी आत्मायें इन्हों का प्रभाव, उन्हों पर भी पड़ेगा। यह भी प्रत्यक्षता का एक निमित्त दृश्य बनेगा। गवर्मेन्ट को भी दिखायेंगे कि यह यूथ देखो, अपनी मन्सा द्वारा भी विश्व कल्याण के निमित्त हैं। ठीक है ना? अभी पक्का ग्रुप चाहिए। ऐसे नहीं गवर्मेन्ट और सन्यासियों के आगे रखें और कुछ समय के बाद फिर फेल हो जायें। नहीं। पक्के हों। ऐसा पक्का ग्रुप बापदादा को बताना जो गैरन्टी करे कि हम अचल, अडोल, अविनाशी ब्राह्मण आत्मायें हैं। कुछ भी हो जाए हिले नहीं। तो ऐसा ग्रुप बापदादा के सामने लाना। ठीक है ना? अच्छी हिम्मत वाले हैं। जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की मदद है ही है। अच्छा। मुबारक हो।

भारत के यूथ भी ऐसे तैयार हों। ऐसे पक्के यूथ तैयार करो। आज पक्के कल कच्चे नहीं। (सभी ने वायदे लिखकर दिये हैं) बापदादा लिखतें तो बहुत

देख चुके हैं। (सभी हंसने लगे) हंसते हैं। वायदे के पत्र बापदादा के पास सभी के बहुत जमा हैं। तो भारत के यूथ बताओ जो आज वायदा किया है, वह फाइल में रहेगा या फाइनल रहेगा? क्या होगा? फाइनल होगा या फाइल में रहेगा? जो पक्के हैं वह हाथ उठाओ। इन्हों का वीडियो निकालो। यह वीडियो आप लोगों को भेजा जायेगा। फाइनल वायदा करने वाले एक्जैम्पुल बनेंगे। बाकी फाइल तो बापदादा के पास बहुत-बहुत हैं। समझा। फाइल में नहीं रखना, फाइनल बनकर दिखाना। अच्छा।

अच्छा – (दिल्ली वालों ने मेला सम्भाला है) सभी को अच्छी सेवा की लाटरी मिली है। तो दिल्ली वालों ने सेवा की लाटरी ले ली और हर समय के लिए सेवा की नूँध, नूँध ली। सेवा पसन्द है? दिल्ली वाले जो सेवा में आये हैं वह उठो। आगरा वाले उठो। अच्छा है, सहयोगी बनना अर्थात् समीप आना। विशेष आत्माओं के समीप आने का चांस मिलता है और साथ-साथ सेवा का बल समय पर कार्य में आता है। तो जमा भी करते हो और श्रेष्ठ आत्माओं के समीप भी आते हो। अनेक ब्राह्मण आत्माओं के सम्पर्क में आते, तो नजदीक आने का यह साधन अच्छा है। सभी को चांस दिया है, अच्छा किया। दिल्ली वालों को पसन्द है ना! अच्छा।

(रतन भाई लण्डन तथा अन्य दो भाईयों से)– ईश्वरीय सेवा का कोई भी कार्य होता है, उसका लक्ष्य आत्माओं को बाप के समीप सम्बन्ध में लाना है। उन्हों का किसी भी प्रकार से जमा कराने का साधन है। तो सभी इसी लक्ष्य से सेवा के निमित्त हो ना? यही लक्ष्य है ना? तो बापदादा देखेंगे कितनी आत्माओं का भविष्य बनाने के निमित्त बने हैं। ग्रुप ले आयेंगे ना? अच्छा गुलदस्ता ले आना। फाउण्डेशन का गुलदस्ता ले आना। पसन्द है? जो कार्य होता है उसमें सेवा समाई हुई है। सिर्फ निमित्त बनना होता है। तो अच्छा किया है। अभी बापदादा के आगे गुलदस्ता ले आना। ठीक है ना? अच्छा उमंग है। हिम्मत वाले को बाप की मदद मिलती ही है। तो कार्य की मुबारक हो और इनएडवांस गुलदस्ते लाने की भी मुबारक। अच्छा।

सभी की मुबारक सुन-सुनकर सब खुश हो रहे हैं तो आप सभी को कितनी मुबारक मिली? अरब खरब से भी ज्यादा मुबारक है। अच्छा।

सर्व नव युग के विश्व अधिकारी, नव जीवन द्वारा विश्व परिवर्तक आत्माओं

को, सदा सफल करने से सफलतामूर्त बनने वाली आत्माओं को, सदा अपने किये हुए वायदों को साकार स्वरूप देने वाले अचल, अखण्ड स्वरूप आत्माओं को, सदा उत्सव में रह औरों को भी उत्सव द्वारा उत्साह दिलाने वाले आत्माओं को, बापदादा का नये वर्ष और नये युग के स्थापना की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। साथ-साथ हिम्मत रख सर्व बच्चे आगे बढ़ने वाले हिम्मते बच्चे और मददे बाप ऐसे सर्व बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(रात्रि १२ बजे के बाद बापदादा ने सभी बच्चों को पुन: नये वर्ष की बधाई दी)

सर्व विश्व के कोने-कोने में, विश्व के चारों ओर विशेष नव जीवन में रहने वाले सभी को नये वर्ष के साथ-साथ नव युग की भी मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। ब्राह्मण बच्चों के लिए तो हर दिन, हर सेकण्ड नया है। तो अभी पुराने वर्ष की विदाई है और नये वर्ष को बधाई हो। ऐसे सदा हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो हर कर्म, संकल्प बधाई वाले हो। जो भी सम्पर्क में आये वह सदा बधाई हो, बधाई हो, यही गीत गाते रहें। इस नये वर्ष में सभी को जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते रहना और सदा खुशी में मन से नाचते रहना और सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहना। तो ऐसे नये जीवन, नये उमंग-उत्साह की चारों ओर के बच्चों को नये वर्ष के साथ-साथ मुबारक हो, मुबारक हो। गुडनाईट और गुडमार्निंग।

अच्छा। ओम् शान्ति।